وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا

और उन लोगों ने कहा जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते के हम पर फरिशते क्यूं नहीं उतारे जाते

الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

या (फिर ऐसा क्यूं नहीं होता) के हम खुद अपने रब को देख लेते? यक़ीनन उन्हों ने अपने आप को बहोत बड़ा समझा

وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى

और बहोत बड़ी सरकशी की। जिस दिन वो फरिशतों को देखेंगे तो उस दिन मुजरिमों को खुशी

يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَ يَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾ وَقَدِمْنَآ

नहीं होगी बल्के वो कहेंगे के (खुदाया!) हमें ऐसी पनाह दे के ये हम से दूर हो जाएं। और हम मुतवज्जेह होंगे

اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾ اَصْحٰبُ

उन आमाल की तरफ जो उन्हों ने किए, फिर हम उस को उड़ता हुवा गुबार (की तरह बेकीमत) बना देंगे। जन्नत

الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّ اَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾ وَيَوْمَ

वाले उस दिन अच्छे होंगे ठिकाने के ऐतेबार से और ख्वाबगाह के ऐतेबार से भी अच्छे होंगे। और जिस दिन

تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾

आसमान बादल पर से फट जाएगा और लगातार फ़रिशते उतारे जाएंगे।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا

हक़ीक़ी हुकूमत उस दिन रहमान तआला के लिए होगी। और वो दिन काफिरों

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ

पर बड़ा सख्त होगा। और उस दिन ज़ालिम अपने हाथ काटेगा

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى

कहेगा के काश के मैं रसूल के साथ (दीन की) राह पर लग जाता। हाए अफसोस!

لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِىْ

काश के फुलाँ को मैं दोस्त न बनाता। उस ने तो मुझ को नसीहत के

عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ

मेरे पास पहोंच चुकने के बाद उस से बेहका दिया। और शैतान तो है ही इन्सान को वक़्त पर

خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا

दग़ा देने वाला। और रसूल कहेंगे ऐ मेरे रब! यक़ीनन मेरी क़ौम इस

هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

कुरआन को बिल्कुल ही छोड़ बैठी थी। और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए

عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّ نَصِيْرًا ﴿٣١﴾

मुजरिम लोगों को दुशमन बनाया है। और आप का रब हिदायत देने और मदद करने के लिए काफी है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً

और काफिरों ने कहा के इस नबी पर कुरआन इकट्ठा एक ही मरतबा क्यूं नहीं उतारा

وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ

गया? इसी तरह (हम ने उतारा है) ताके हम उस के ज़रिए आप के दिल को मज़बूत करें और हम ने उस को

تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ

ठेहेर ठेहेर कर पढ़वाया है। और वो आप के पास कोई मिसाल नहीं लाते मगर हम आप को उस का ठीक ठीक जवाब

وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ؕ﴿٣٣﴾ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ

और ज़्यादा वज़ाहत के साथ इनायत कर देते हैं। वो लोग जिन को अपने चेहरों के बल जहन्नम की तरफ़

اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ

ले जाया जाएगा। ये लोग जगह में भी बदतर और रास्ते से भी ज़्यादा भटके हुए हैं। यक़ीनन

اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ جَعَلْنَا مَعَهٗۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ

हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी और हम ने उन के साथ उन के भाई हारून को मददगार

وَزِيْرًا ۖ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَاۤ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

बनाया था। फिर हम ने कहा के तुम दोनों जाओ उस क़ौम की तरफ जिन्हों ने हमारी आयतों को

بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ؕ﴿٣٦﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا

झुठलाया है। फिर हम ने उन्हें मलयामेट कर दिया। और क़ौमे नूह को जब उन्हों ने पैग़म्बरों को

الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا

झुठलाया, तो हम ने उन को ग़र्क़ कर दिया और हम ने उन को इन्सानों के लिए एक निशाने (इबरत) बना दिया। और हम ने

لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۖ﴿٣٧﴾ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَاَصْحٰبَ

ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है। और क़ौमे आद और समूद और रस वालों को और

الرَّسِّ وَ قُرُوْنًا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

उस के दरमियान बहोत सी क़ौमों को हलाक किया। और हम ने उन में से हर एक को समझाने के लिए मिसालें

الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ

बयान कीं। और (जब वो न माने तो) हम ने सब को बिल्कुल ही बरबाद कर दिया। और ये (कुफ्फारे मक्का) उस बस्ती पर

الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ

गुज़रते रहे हैं जिस पर बहोत बुरी तरह (पथ्थरों की) बारिश बरसाई गई थी। क्या फिर ये उस को देखते नहीं रहे?

بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿٤٠﴾ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ

बल्के ये क़बरों से ज़िन्दा हो कर उठने की उम्मीद नहीं रखते। और जब ये आप को देखते हैं तो आप का मज़ाक़ ही

اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿٤١﴾ اِنْ كَادَ

बनाते हैं। (और केहते हैं) क्या यही वो शख्स है जिस को अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है? ये शख्स तो क़रीब था

لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ وَسَوْفَ

के हमें हमारे माबूदों से गुमराह कर देता अगर हम उस पर मज़बूत न रेहते। और अनक़रीब

يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾

उन्हें मालूम हो जाएगा जब वो अज़ाब देखेंगे के कौन ज़्यादा गुमराह है?

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ

क्या आप ने देखा उस शख्स को जिस ने अपना माबूद अपनी ख्वाहिश को बना लिया है? क्या फिर आप उस के

وَكِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ

ज़िम्मेदार रेह सकते हैं? क्या आप ये समझते हैं के उन में से अक्सर सुनते या समझते हैं?

اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٤﴾ اَلَمْ تَرَ ع ٤

ये तो सिर्फ चौपाओं की तरह हैं, बल्के उन से भी ज़्यादा गुमराह हैं। क्या आप ने देखा नहीं अपने रब को

اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ

के उस ने साए को कैसे लम्बा किया? अगर वो चाहता तो उस को एक हालत पर ठेहराया हुवा रखता।

ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ﴿٤٥﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا

फिर हम ने उस का रहनुमा सूरज बनाया। फिर हम ने उस को अपनी तरफ

قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿٤٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا

आहिस्ता आहिस्ता समेट लिया। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए रात को लिबास (परदे की चीज़)

وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ

और नींद को आराम की चीज़ बनाया और दिन को दोबारा उठ खड़े होने का ज़रिया बनाया। और वही अल्लाह है जो

اَرۡسَلَ الرِّيٰحَ بُشۡرًاۢ بَيۡنَ يَدَىۡ رَحۡمَتِهٖ ۚ وَاَنۡزَلۡنَا

खुशख़बरी देने के लिए अपनी रहमत (की बारिश) से पेहले हवाएं भेजता है। और हम ने आसमान

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوۡرًا ۙ﴿۴۸﴾ لِّنُحۡیِۦَ بِهٖ بَلۡدَةً مَّيۡتًا وَّ نُسۡقِيَهٗ

से पाक करने वाला पानी उतारा। ताके हम उस के ज़रिए मुर्दा इलाक़ा ज़िन्दा कर दें और वो पानी हम पिलाते हैं

مِمَّا خَلَقۡنَاۤ اَنۡعَامًا وَّاَنَاسِىَّ كَثِيۡرًا ﴿۴۹﴾ وَلَقَدۡ صَرَّفۡنٰهُ

अपनी मखलूक़ में से चौपाओं को और बहोत से इन्सानों को। यक़ीनन वो पानी कई तरीक़ों से उन के दरमियान

بَيۡنَهُمۡ لِيَذَّكَّرُوۡا ۖ فَاَبٰۤى اَكۡثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوۡرًا ﴿۵۰﴾

हम ने तक़सीम किया ताके वो नसीहत पकड़ें। फिर भी अक्सर लोग नाशुकरी किए बग़ैर न रहे।

وَلَوۡ شِئۡنَا لَبَعَثۡنَا فِىۡ كُلِّ قَرۡيَةٍ نَّذِيۡرًا ﴿ۖ۵۱﴾ فَلَا تُطِعِ الۡكٰفِرِيۡنَ

और अगर हम चाहते तो हम हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। तो आप काफिरों का केहना न मानिए

وَجَاهِدۡهُمۡ بِهٖ جِهَادًا كَبِيۡرًا ﴿۵۲﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ مَرَجَ الۡبَحۡرَيۡنِ

और उन के साथ आप बड़ा जिहाद कीजिए। और वही अल्लाह है जिस ने दो समन्दर मिला कर चलाए,

هٰذَا عَذۡبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلۡحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيۡنَهُمَا

ये मीठा प्यास बुझाने वाला है और ये नमकीन कड़वा है। और हम ने उन दोनों के दरमियान

بَرۡزَخًا وَّحِجۡرًا مَّحۡجُوۡرًا ﴿۵۳﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ مِنَ الۡمَآءِ

एक आड़ बना दी है और एक मज़बूत रोक रख दी है। और वही अल्लाह है जिस ने पानी से

بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهۡرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيۡرًا ﴿۵۴﴾

इन्सान पैदा किया, फिर उस को खानदान वाला और सुसराल वाला बनाया। और तेरा रब कुदरत वाला है।

وَ يَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنۡفَعُهُمۡ وَلَا يَضُرُّهُمۡ ؕ وَكَانَ

और ये अल्लाह के अलावा ऐसी चीज़ें पूजते हैं जो उन को न नफ़ा दे सकती हैं और न उन को ज़रर पहोंचा सकती हैं।

الۡكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيۡرًا ﴿۵۵﴾ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا

और काफ़िर अपने रब के खिलाफ मदद करने वाला है। और हम ने आप को सिर्फ़ बशारत देने वाला और डराने

وَّنَذِيۡرًا ﴿۵۶﴾ قُلۡ مَاۤ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ اِلَّا مَنۡ شَآءَ

वाला बना कर भेजा है। आप फ़रमा दीजिए के मैं तुम से इस पर कोई उजरत नहीं मांगता मगर वो जो चाहे

اَنۡ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيۡلًا ﴿۵۷﴾ وَتَوَكَّلۡ عَلَى الۡحَىِّ الَّذِىۡ

के अपने रब की तरफ़ रास्ता पकड़ ले। और आप तवक्कुल कीजिए उस ज़िन्दा ज़ात पर जिसे

لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۚۛ ۝٥٨
मौत नहीं आएगी और उस की हम्द के साथ तस्बीह बयान कीजिए। और वो अपने बन्दों के गुनाहों की खबर रखने

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ
वाला काफी है। वो अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन और वो चीज़ें जो उन के दरमियान में हैं छे दिन में

اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚۛ اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ
पैदा कीं, फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा। जो रहमान है, इस लिए उस के मुतअल्लिक़ किसी बाखबर से

خَبِيْرًا ۝٥٩ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا
पूछ लें। और जब उन से कहा जाता है के रहमान को सज्दा करो तो वो केहते हैं के रहमान क्या चीज़

وَمَا الرَّحْمٰنُ ٭ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ۩ ۝٦٠ تَبٰرَكَ
है? क्या हम सज्दा करें उसे जिस का आप हमें हुक्म दें और ये चीज़ उन्हें नफ़रत में और बढ़ाती है। बरतर है

الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا
वो अल्लाह जिस ने आसमान में बुर्ज बनाए और जिस ने आसमान में सूरज

وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ۝٦١ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً
और रोशन चाँद बनाया। और अल्लाह ही ने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया

لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ۝٦٢ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ
उस के लिए जो ग़ौर करना चाहे या शुक्र अदा करना चाहे। और रहमान तआला के बन्दे

الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ
वो हैं जो ज़मीन पर चलते हैं आहिस्तगी से और जब उन से जाहिल लोग मुखातब

الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ۝٦٣ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ
होते हैं तो वो केह देते हैं अस्सलामु अलैकुम। और जो अपने रब के सामने सज्दा और क़याम की हालत

سُجَّدًا وَّقِيَامًا ۝٦٤ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا
में रात गुज़ारते हैं। और जो यूँ केहते हैं के ऐ हमारे रब! हम से जहन्नम का

عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖۗ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝٦٥ اِنَّهَا سَآءَتْ
अज़ाब हटा दे। यक़ीनन उस का अज़ाब चिमट जाने वाला है। यक़ीनन जहन्नम ठेहेरने और

مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٦٦ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا
रेहने की बुरी जगह है। और (रहमान तआला के बन्दे वो हैं के) जब वो खर्च करते हैं तो इसराफ नहीं करते

وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِيْنَ

और तंगी नहीं करते और उन का खर्च उस के दरमियान ऐतेदाल से होता है। और जो

لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ

अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद नहीं पुकारते और उस जान को क़त्ल नहीं करते जिसे

حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ

अल्लाह ने हराम क़रार दिया मगर हक़ में और जो ज़िना नहीं करते। और जो ऐसा करेगा तो वो गुनाह

اَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ

पाएगा। उस के लिए अज़ाब क़यामत के दिन दुगना किया जाएगा और वो उस अज़ाब में

فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا

ज़लील हो कर पड़ा रहेगा। मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किए

فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

तो अल्लाह उन की बुराइयाँ नेकियों से बदल देगा। और अल्लाह बहोत ज़्यादा

غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और जो तौबा करे और नेक अमल करे तो यक़ीनन वो अल्लाह

اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا

की तरफ़ तौबा कर रहा है। और (रहमान के बन्दे वो हैं) जो बुराई में शरीक नहीं होते और जब वो लग़वीय्यात पर

بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

गुज़रते हैं तो वक़ार के साथ गुज़र जाते हैं। और जब उन्हें अपने रब की आयतों के साथ नसीहत की जाती है

لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ

तो उस पर बेहरे और अन्धे हो कर नहीं गिरते। और जो केहते हैं के

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ

ऐ हमारे रब! हमारे लिए अपनी बीवियों और अपनी औलाद की तरफ से आँखों की ठन्डक अता फ़रमा

وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ

और हमें मुत्तक़ियों का पेशवा बना। ये वो हैं जिन्हें उन के सब्र के इवज़ (जन्नत की) बालाई मन्ज़िलें

بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾ خٰلِدِيْنَ

मिलेंगी और वहाँ तहीय्या और सलाम के साथ सब उन्हें मिलने आएंगे। वो उन में हमेशा

فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٧٦ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ

रहेंगे। वो जन्नत ठेहरने और रेहने कि लिए कितनी अच्छी है। आप फ़रमा दीजिए के मेरे रब को तुम्हारी कोई

لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝٧٧

परवाह नहीं अगर तुम न भी पुकारो। अब तुम तो झुठला चुके, फिर अनक़रीब ये अज़ाब चिपक कर रहेगा।

رُكُوْعَاتُهَا ١١ ‏ (٤٧) سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ مَكِّيَّةٌ (٢٦) ‏ اٰيَاتُهَا ٢٢٧

और ११ रूकूअ हैं ‏ सूरह शुअरा मक्का में नाज़िल हुई ‏ उस में २२७ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طٰسٓمّٓ ۝١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٢ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ

ता सीन मीम। ये साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं। शायद आप अपने को हलाक

نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٣ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ

कर बैठें इस वजह से के वो ईमान नहीं लाते। अगर हम चाहें तो उन पर

مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ۝٤

आसमान से कोई मोअजिज़ा उतार दें, फिर उन की गर्दनें उस के सामने झुकी रेह जाएं।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ

और उन के पास रहमान की तरफ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वो उस से

مُعْرِضِيْنَ ۝٥ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ

ऐराज़ करते हैं। फिर उन्हों ने झुठलाया, फिर उन के पास उस की हक़ीक़त आ जाएगी जिस का वो इस्तिहज़ा

يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٦ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا

किया करते थे। क्या उन्हों ने देखा नहीं ज़मीन की तरफ़ के हम ने ज़मीन

فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝٧ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا

में कितने खूबसूरत जोड़े उगाए। यक़ीनन उस में निशानी है। और

كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ

उन में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। और यक़ीनन आप का रब वो ज़बर्दस्त है,

الرَّحِيْمُ ۝٩ وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ

निहायत रहम वाला है। और जब आप के रब ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को पुकारा के आप ज़ालिम क़ौम के पास

الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝١١ قَالَ رَبِّ

जाइए। फिरऔन की क़ौम के पास। क्या वो डरते नहीं हैं? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब!

اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝١٢ وَ يَضِيْقُ صَدْرِيْ

यक़ीनन मैं डरता हूँ इस से के वो मुझे झुठलाएं। और मेरा सीना तंग होता है

وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۝١٣ وَلَهُمْ عَلَيَّ

और मेरी ज़बान चलती नहीं, इस लिए हारून की तरफ रिसालत भेजिए। और उन का मुझ पर

ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝١٤ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا

एक गुनाह है, तो मैं डरता हूँ के वो मुझे क़त्ल कर देंगे। अल्लाह ने फरमाया के हरगिज़ नहीं। फिर आप दोनों

بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ۝١٥ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ

जाओ हमारे मोअजिज़ात ले कर, यक़ीनन हम तुम्हारे साथ सुन रहे हैं। फिर तुम जाओ फिरऔन के पास, फिर उस से

اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٦ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ

कहो के हम रब्बुल आलमीन के भेजे हुए पैग़म्बर हैं। तो तू हमारे साथ बनी इस्राईल को

اِسْرَآءِيْلَ ۝١٧ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ

भेज दे। फ़िरऔन बोला क्या हम ने तुझे अपने यहाँ बचपन में नहीं पाला और तू

فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۝١٨ وَ فَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ

हमारे अन्दर अपनी उम्र के कई साल नहीं रहा? और तू ने की वो हरकत जो

فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٩ قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا

की और तू नाशुकरी करने वालों में से था? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के मैं ने वो हरकत की उस वक्त

مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝٢٠ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ

जब के मैं नावाक़िफ था। फिर मैं तुम से भाग गया जब मैं तुम से डरा तो मुझे

لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّ جَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٢١ وَ تِلْكَ

मेरे रब ने नुबूव्वत अता की और मुझे रसूलों में से बना दिया। और ये कोई

نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝٢٢

एहसान है जो तू मुझ पर जतला रहा है उस के मुक़ाबले में के तू ने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना रखा है?

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٣ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

फिरऔन पूछने लगा और तमाम जहानों की परवरिश करने वाली चीज़ क्या है? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के वो आसमानों

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ لِمَنْ

और ज़मीन और उन चीज़ों का रब है जो उन के दरमियान में हैं, अगर तुम यक़ीन रखते हो। फ़िरऔन ने उन से

حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ

कहा जो उस के इर्द गिर्द थे, क्या तुम सुनते नहीं हो? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया वो तुम्हारा और तुम्हारे पेहले

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ

बाप दादाओं का रब है। फिरऔन बोला के यक़ीनन तुम्हारा ये पैग़म्बर जो तुम्हारी तरफ रसूल बना कर भेजा गया है

لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ

पागल है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के वो तो मशरिक़ और मग़रिब और उन दो के दरमियान की तमाम चीज़ों का

اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ

रब है, अगर तुम अक़्ल रखते हो। फिरऔन बोला के अगर तुम मेरे अलावा किसी को माबूद बनाओगे तो

لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ

मैं तुम्हें क़ैदियों में से बना दूंगा। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के क्या अगर्चे मैं तेरे पास कोई रोशन दलील

مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾

लाऊँ, तब भी? फ़िरऔन बोला के फिर तू उस को पेश कर अगर तू सच्चा है।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ

फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना असा डाला, तो फौरन वो साफ़ अज़दहा बन गया। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना हाथ खींचा

ع ٢ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ

तो उसी वक़्त वो देखने वालों के सामने रोशन बन गया। फ़िरऔन ने दरबारियों से कहा जो उस के इर्द गिर्द थे,

اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ

यक़ीनन ये शख़्स ज़रूर माहिर जादूगर है। जो चाहता है के तुम्हें तुम्हारे मुल्क से अपने जादू के ज़ोर से निकाल

بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ

दे। फिर तुम क्या मशवरा देते हो? दरबारियों ने कहा के उसे और उस के भाई को मुहलत दो और शेहरों

فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾

में जादूगरों को इकट्ठा करने वाले भेज दो। जो तुम्हारे पास हर माहिर जादूगर को ले आएं।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾ وَّقِيْلَ

फिर जादूगर जमा किए गए मुक़र्ररा दिन के मुक़र्ररा वक़्त पर। और लोगों से

لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ۝٣٩ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ

कहा गया, क्या तुम जमा हो गए? ताके हम जादूगरों का इत्तिबा करें

اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝٤٠ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا

अगर वो ग़ालिब रहें। फिर जब जादूगर आए तो उन्हों ने

لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝٤١

फ़िरऔन से कहा क्या हमें मज़दूरी मिलेगी अगर हम ग़ालिब रहेंगे?

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝٤٢ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى

फ़िरऔन बोला के जी हाँ! और तुम उस वक़्त मुक़र्रबीन में शामिल कर दिए जाओगे। उन से मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया

اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝٤٣ فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ

के तुम डालो जो तुम डालने वाले हो। तो उन्हों ने अपनी रस्सियों और अपनी लाठियों को डाला

وَ قَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ۝٤٤ فَاَلْقٰى

और उन्हों ने कहा के फ़िरऔन की इ़ज़्ज़त की क़सम! यक़ीनन हम ही ग़ालिब रहेंगे। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना

مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ۝٤٥ فَاُلْقِيَ

असा डाला, तो अचानक वो निगलने लगा उन चीज़ों को जो वो झूठ बना कर लाए थे। फिर

السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝٤٦ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٧

जादूगर सज्दे में गिर गए। केहने लगे, हम ईमान लाए तमाम जहानों के रब पर।

رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ۝٤٨ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ

मूसा और हारून के रब पर। फिरऔन ने पूछा क्या तुम उस पर ईमान लाए इस से पेहले के मैं तुम्हें

اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ

इजाज़त दूं? यक़ीनन मूसा तुम में सब से बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखलाया।

فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۬ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

तो अनक़रीब तुम्हें पता चल जाएगा। मैं तुम्हारे हाथ और पैर जानिबे मुख़ालिफ़ से काट

مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٤٩ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ؗ

दूँगा और तुम सब को सूली पर चढ़ाऊँगा। उन्हों ने कहा के नुक़सान कोई नहीं।

اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝٥٠ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا

यक़ीनन हम तो अपने रब की तरफ पलट कर जाएंगे। यक़ीनन हम तो इस का लालच रखते हैं के हमारा रब हमारी

رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٥١ وَاَوْحَيْنَآ ع ٣

ख़ताएं बख्श दे के हम सब से पेहले ईमान लाने वाले हैं। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम)

اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝٥٢

को हुक्म दिया के मेरे बन्दों को ले कर रात के वक़्त निकल जाइए, इस लिए के तुम्हारा पीछा किया जाएगा।

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝٥٣ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ

चुनांचे फ़िरऔन ने शेहरों में जमा करने वालों को भेजा। के यक़ीनन ये तो

لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۝٥٤ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ۝٥٥

एक छोटा सा गिरोह है। और उन्हों ने हमें गुस्सा दिलाया है।

وَ اِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۝٥٦ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ

और यक़ीनन हम इकट्ठे हो कर ही डरा देंगे। फिर हम ने उन्हें बाग़ात से और चशमों

وَّعُيُوْنٍ ۝٥٧ وَّكُنُوْزٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝٥٨ كَذٰلِكَ

से निकाला। और खज़ानों से और उम्दा रेहने की जगहों से। इसी तरह। और हम

وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝٥٩ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝٦٠

ने उन चीज़ों का वारिस बनी इस्राईल को बनाया। फिर फ़िरऔनियों ने उन का पीछा किया सूरज निकलते हुए।

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝٦١

फिर जब दोनों जमाअतों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा (अलैहिस्सलाम) के साथी केहने लगे यक़ीनन हम तो पकड़ लिए गए।

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ۝٦٢ فَاَوْحَيْنَآ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया हरगिज़ नहीं। यक़ीनन मेरे साथ मेरा रब है, अनक़रीब वो मुझे रास्ता दिखाएगा। तो हम ने

اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ

मूसा (अलैहिस्सलाम) को हुक्म दिया के अपना असा समन्दर पर मारिए। तो समन्दर फट गया और हर

كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ۝٦٣ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ۝٦٤

हिस्सा अज़ीम पहाड़ की तरह हो गया। और हम ने वहाँ दूसरों को क़रीब पहोंचा दिया।

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝٦٥ ثُمَّ اَغْرَقْنَا

और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन तमाम को जो आप के साथ थे नजात दी। फिर हम ने दूसरों को

الْاٰخَرِيْنَ ۝٦٦ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

ग़र्क़ कर दिया। यक़ीनन उस में इबरत है। और उन में से अक्सर ईमान लाने वाले

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾ وَاتْلُ
नहीं थे। और यक़ीनन तेरा रब वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। और उन के सामने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾
का क़िस्सा तिलावत कीजिए। जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने अब्बा और अपनी क़ौम से पूछा किन चीज़ों की तुम इबादत

قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾ قَالَ هَلْ
करते हो? वो बोले के हम इबादत करते हैं बुतों की, फिर हम उस पर जमे रेहते हैं। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾
क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो? या तुम्हें नफा दे सकते हैं या ज़रर पहोंचा सकते हैं?

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ
वो बोले बल्के हम ने हमारे बाप दादा को इसी तरह करते पाया। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ
ने देखा जिन चीज़ों की इबादत करते थे। तुम और तुम्हारे गुज़श्ता

الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾
आबा व अजदाद। तो यक़ीनन ये मेरे दुशमन हैं सिवाए तमाम जहानों के रब के।

الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ
जिस ने मुझे पैदा किया, वो मुझे रास्ता दिखाता है। और वही अल्लाह मुझे खाना

وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِيْ
पीना देता है। और जब मैं बीमार होता हूँ तो वो मुझे शिफ़ा देता है। और वही मुझे मौत

يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ
देगा, फिर मुझे ज़िन्दा करेगा। और वही अल्लाह है जिस से मुझे तवक्क़ुअ है के वो मेरी ख़ताएं

خَطِيْٓـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ
हिसाब के दिन बख्श देगा। ऐ मेरे रब! मुझे हुक्म अता फ़रमा और मुझे सुलहा

بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ
के साथ मिला दे। और मेरा ज़िक्रे ख़ैर पीछे आने वालों में

فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾
रख दे। और मुझे जन्नते नईम के वुरसा में से बना दे।

وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۙ﴿٨٦﴾ وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ

और तू मेरे अब्बा की मग़फिरत कर दे, यक़ीनन वो गुमराह लोगों में से था। और तू मुझे उस दिन रूस्वा न करना

يُبْعَثُوْنَ ۙ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ۙ﴿٨٨﴾ اِلَّا مَنْ

जिस दिन मुर्दे क़बरों से ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। जिस दिन माल और बेटे नफा नहीं देंगे। मगर वो शख्स

اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۘ﴿٨٩﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿٩٠﴾

जो अल्लाह के पास क़ल्बे सलीम ले कर आया। और जन्नत मुत्तक़ियों के क़रीब कर दी जाएगी।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ۙ﴿٩١﴾ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ

और जहन्नम गुमराहों के सामने कर दी जाएगी। और उन से कहा जाएगा के कहाँ हैं वो माबूद

تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿٩٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ

जिन की तुम अल्लाह के अलावा इबादत करते थे? क्या वो तुम्हारी मदद या अपना बचाव कर

اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ۭ﴿٩٣﴾ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ۙ﴿٩٤﴾ وَجُنُوْدُ

सकते हैं? फिर उस में औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे, वो भी और तमाम सरकश भी। और इबलीस

اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ۭ﴿٩٥﴾ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ۙ﴿٩٦﴾

के तमाम लशकर भी। वो कहेंगे इस हाल में के वो जहन्नम में आपस में झगड़ रहे होंगे।

تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿٩٧﴾ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ

अल्लाह की क़सम! यक़ीनन हम खुली गुमराही में थे। जब के हम रब्बुल आलमीन के साथ (शुरका को) बराबर

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا

क़रार देते थे। और हमें तो उन मुजरिमों ने ही गुमराह किया है। फिर हमारा न कोई

مِنْ شَافِعِيْنَ ۙ﴿١٠٠﴾ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ اَنَّ لَنَا

सिफारिश करने वाला है। और न कोई ग़मख्वार दोस्त है। तो काश के हमारे लिए दुन्या में पलट कर

كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ

जाना हो तो हम ईमान लाने वालों में से हो जाएं। यक़ीनन उस में इबरत है।

وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ

और उन (कुफ़्फ़ार) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं। और यक़ीनन तेरा रब वो ज़बर्दस्त है,

ع ٥ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ۨالْمُرْسَلِيْنَ ۚ﴿١٠٥﴾ اِذْ قَالَ

निहायत रहम वाला है। इसी तरह नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया। जब उन से

لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ

उन के भाई नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं हो? यक़ीनन मैं तुम्हारा अमानतदार

اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ

रसूल हूँ। तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा केहना मानो। और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का

مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا

सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो सिर्फ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। तो तुम अल्लाह

اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١١٠﴾ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ

से डरो और मेरा केहना मानो। वो बोले क्या हम आप पर ईमान लाएं हालांके रज़ील लोगों ने आप का

الْاَرْذَلُوْنَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٢﴾

इत्तिबा किया है? नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के और मुझे क्या मालूम वो काम जो वो करते थे।

اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَمَآ اَنَا

उन का हिसाब तो सिर्फ़ मेरे रब के ज़िम्मे है, काश तुम समझो। और मैं ईमान लाने वालों

بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٤﴾ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوْا

को धुतकारने वाला नहीं हूँ। मैं तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। उन्हों ने कहा

لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿١١٦﴾ قَالَ

के ऐ नूह! अगर तुम बाज़ न आए, तो तुम्हें पथ्थर मार मार कर हलाक कर दिया जाएगा। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया

رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ﴿١١٧﴾ فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا النصف

ऐ मेरे रब! यक़ीनन मेरी क़ौम ने मुझे झुठलाया। अब तू मेरे और उन के दरमियान फ़ैसला कर दे

وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

और बचा ले मुझे और उन को जो मेरे साथ ईमान लाए हैं। फिर हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को नजात दी

وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ

और उन लोगों को जो आप के साथ भरी हुई कशती में थे। फिर हम ने बाक़ी लोगों को उस के बाद

الْبٰقِيْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ ع ١٤

ग़र्क़ कर दिया। यक़ीनन उस में इबरत है। और उन (कुफ्फार) में से अक्सर ईमान लाने

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ

वाले नहीं हैं। और यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। क़ौमे आद

عَادُ ِالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ

ने पैग़म्बरों को झुठलाया। जब उन के भाई हूद (अलैहिस्सलाम) ने उन से फरमाया

اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٢٥﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

क्या तुम डरते नहीं हो? यक़ीनन मैं तुम्हारा अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٢٦﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ

और मेरा केहना मानो। और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो

اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٧﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً

सिर्फ़ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। क्या तुम हर टीले पर निशान तामीर करते हो अबस काम करते

تَعْبَثُوْنَ ﴿١٢٨﴾ وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿١٢٩﴾

हुए? और तुम कारख़ाने बनाते हो, शायद तुम्हें हमेशा रेहना है।

وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

और जब किसी को पकड़ते हो तो ज़ालिम बन कर पकड़ते हो। अब अल्लाह से डरो

وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿١٣١﴾ وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

और मेरा केहना मानो। और उस अल्लाह से डरो जिस ने तुम्हारी इमदाद की उन चीज़ों से जो तुम जानते हो।

اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٣٣﴾ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٣٤﴾ اِنِّيْٓ

उस ने तुम्हारी चौपाओं और बेटों, और बाग़ात और चशमों के ज़रिए इमदाद की। यक़ीनन मैं

اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣٥﴾ قَالُوْا سَوَآءٌ

तुम पर एक भारी दिन के अज़ाब से डरता हूँ। वो बोले हम पर

عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿١٣٦﴾ اِنْ هٰذَآ

बराबर है आप हमें नसीहत करें या न करें। ये तो

اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣٧﴾ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿١٣٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ

सिर्फ़ पेहले लोगों की आदतें हैं। और हम पर तो अज़ाब आएगा नहीं। तो उन्हों ने हूद (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया,

فَاَهْلَكْنٰهُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

फिर हम ने उन्हें हलाक कर दिया। यक़ीनन उस में इबरत है। और उन (कुफ़्फ़ार) में से अक्सर ईमान लाने

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٤٠﴾ كَذَّبَتْ ع ١٤

वाले नहीं हैं। और यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। क़ौमे समूद

ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ

ने पैग़म्बरों को झुठलाया। जब उन से उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया

اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٢﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

क्या तुम डरते नहीं हो? यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٤٤﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ

और मेरी इताअत करो। और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता।

اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٥﴾ اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ

मेरी उजरत तो सिर्फ़ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। क्या तुम छोड़ दिए जाओगे

مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ﴿١٤٦﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٤٧﴾ وَّ زُرُوْعٍ

यहाँ की नेअमतों में अमन से? बाग़ात और चशमों में। और खेतियों

وَّ نَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ﴿١٤٨﴾ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا

और खजूर के दरख्तों में जिन के ताज़ा फल मुलायम (नर्म) हैं। और तुम महारत से पहाड़ तराश कर

فٰرِهِيْنَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾ وَلَا تُطِيْعُوْٓا

घर बनाते हो। फिर अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। और हद से तजावुज़ करने

اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٥١﴾ الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ

वालों का केहना मत मानो। जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं और इस्लाह

وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَآ اَنْتَ

नहीं करते। वो बोले के तुम पर तो जादू कर दिया गया है। तुम नहीं हो

اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾

मगर हम जैसे एक इन्सान। इस लिए तुम मोअजिज़ा ले आओ अगर तुम सच्चों में से हो। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾

के ये ऊँटनी है, इस के लिए एक पीने की बारी है और तुम्हारे लिए एक मुक़र्ररा दिन की पीने की बारी है।

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾

और उसे बुराई से मत छूना, वरना तुम्हें भारी दिन का अज़ाब पकड़ लेगा।

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٧﴾ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ؕ

फिर उन्हों ने उस के पैर काट दिए, फिर वो नादिम हुए। फिर उन को अज़ाब ने पकड़ लिया।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾

यक़ीनन उस में इबरत है। और उन (कुफ्फार) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

ع ١٥ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٥٩﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ

और यक़ीनन आप का रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। क़ौमे लूत ने पैग़म्बरों को

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦٠﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٦١﴾

झुठलाया। जब उन से उन के भाई लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम डरते नहीं हो?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٦٢﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٦٣﴾

यक़ीनन मैं तुम्हारा अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

وَمَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ

और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो सिर्फ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٤﴾ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٥﴾

है। क्या तुम मर्दों के पास आते हो? तमाम जहान वालों में से (किसी को ऐसा करते देखा?)

وَ تَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ

अपनी बीवियाँ छोड़ कर, जो तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए पैदा की हैं। बल्के तुम

قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ

ऐसी क़ौम हो जो हद से तजावुज़ करती है। वो बोले ऐ लूत! अगर तुम बाज़ न आए तो निकाल दिए

مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ

जाओगे। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन मैं तुम्हारे इस अमल से शदीद नफरत रखने वालों में से हूँ। ऐ मेरे

نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾

रब! तू नजात दे मुझे और मेरे मानने वालों को इस हरकत से जो वो कर रहे हैं। फिर हम ने उन्हें और उन के

اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾

मानने वालों को, सब को नजात दी। मगर बुढ़िया जो हलाक होने वालों में रेह गई। फिर हम ने दूसरों को मलयामेट

وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾

कर दिया। और हम ने उन पर पत्थर बरसाए। फिर उन की बारिश बुरी थी जिन को डराया गया था।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاِنَّ

यक़ीनन इस में इबरत है। और उन (कुफ्फार) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं। और यक़ीनन

رَبُّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾ كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ ع ١٢

तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। अयका वालों ने पैग़म्बरों को

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

झुठलाया। जब उन से शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम डरते नहीं हो?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾

यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ

और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो सिर्फ़ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾

है। कैल (व साअ) पूरा भर कर दो और खसारा पहोंचाने वालों में से मत बनो।

وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

और सीधी तराजू से तोलो। और लोगों को उन की चीज़ें कम कर के

اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا

मत दो और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो। और डरो तुम

الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾ قَالُوْٓا اِنَّمَآ

उस अल्लाह से जिस ने तुम्हें और पेहली क़ौमों को पैदा किया। वो बोले बस

اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

तुम पर तो जादू कर दिया गया है। और तुम भी तो हम जैसे एक इन्सान ही हो

وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا

और यक़ीनन हम तुम्हें झूठों में से समझते हैं। इस लिए हम पर आसमान के टुकड़े

مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّيْٓ

आप गिरा दीजिए अगर तुम सच्चों में से हो। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के मेरा रब

اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ

ख़ूब जानता है जो तुम करते हो। फिर उन्हों ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया, तो उन को सायबान के दिन

يَوْمِ الظُّلَّةِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾ اِنَّ

के अज़ाब ने आ पकड़ा। यक़ीनन वो भारी दिन का अज़ाब था। यक़ीनन

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٠﴾

उस में इबरत है। और उन (कुफ्फार) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

ع ١٢ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٩١﴾ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ

और यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। और यक़ीनन ये कुरआन रब्बुल आलमीन

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿١٩٣﴾

की तरफ़ से उतारा गया है। उस को ले कर रूहुल अमीन उतरे हैं।

عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ

आप के दिल पर (उतारा) ताके आप डराने वालों में से हों। जो सलीस अरबी ज़बान

مُّبِيْنٍ ﴿١٩٥﴾ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٩٦﴾ اَوَلَمْ يَكُنْ

में है। और यक़ीनन ये पेहलों की किताबों में भी था। क्या उन के लिए ये

لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٩٧﴾

निशानी नहीं है के उसे बनी इस्राईल के उलमा भी जानते हैं?

وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿١٩٨﴾ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ

और अगर हम इसे अजमियों में से किसी एक पर उतारते, फिर वो उसे उन के सामने पढ़ता,

مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٩﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ

तब भी वो उस पर ईमान न लाते। इसी तरह ये इन्कार मुजरिमों के दिलों में हम ने

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٠٠﴾ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ

दाख़िल कर दिया। के वो उस पर ईमान नहीं लाते यहां तक के दर्दनाक अज़ाब देख

الْاَلِيْمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾

लेते हैं। फिर अज़ाब इस तरह अचानक उन्हें आ लेता है के उन्हें पता भी नहीं होता।

فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾ اَفَبِعَذَابِنَا

फिर वो कहेंगे के क्या हमें मुहलत मिलेगी? क्या ये हमारा अज़ाब जल्दी

يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٢٠٤﴾ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿٢٠٥﴾

तलब कर रहे हैं? क्या राए है अगर हम उन्हें सालहा साल सामाने ऐश देते रहें।

ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

फिर उन पर वो अज़ाब आ जाए जिस से उन्हें डराया जा रहा है। तो जिन नेअमतों से वो लुत्फ़ उठा रहें हैं वो उन्हें

يُمَتَّعُوْنَ ﴿٢٠٥﴾ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿٢٠٨﴾

अज़ाब से बचाने में काम आ सकेंगे? और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया मगर उस के डराने वाले ज़रूर थे।

ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢١٠﴾

नसीहत के लिए। और हम ज़ालिम नहीं हैं। और शयातीन ये कुरआन ले कर नहीं उतरे।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٢١١﴾ اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ

और न उन के मुनासिबे (हाल) है और न वो कर सकते हैं। यक़ीनन वो तो उस के सुनने से दूर

لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ

रखे जाते हैं। इस लिए आप अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को न पुकारिए, वरना आप

مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿٢١٣﴾ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿٢١٤﴾

मुअज़्ज़बीन में से हो जाओगे। और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइए।

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢١٥﴾

और अपना बाज़ू पस्त रखिए उन ईमान वालों के सामने जिन्हों ने आप का इत्तिबा किया। फिर अगर ये

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ

आप की मुख़ालफ़त करें तो आप फरमा दीजिए के मैं बरी हूँ उन कामों से जो तुम करते हो। और आप

عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٢١٨﴾

तवक्कुल कीजिए ज़बर्दस्त, निहायत रहम वाले अल्लाह पर। जो आप को देखता है जिस वक़्त आप क़याम करते हो।

وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿٢١٩﴾ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٢٠﴾

और देखता है आप के चलने फिरने को सज्दा करने वालों के दरमियान। यक़ीनन वो सुनने वाला, इल्म वाला है।

هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢٢١﴾ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ

क्या मैं तुम्हें ख़बर दूँ उस शख़्स की जिस पर शयातीन उतरते हैं? शयातीन हर झूठे

اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿٢٢٣﴾

गुनेहगार पर उतरते हैं। वो सुनी हुई बात को डालते हैं और उन में से अक्सर झूठे हैं।

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿٢٢٤﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ

और गुमराह लोग शुअरा का इत्तिबा करते हैं। क्या आप ने देखा नहीं के वो हर वादी में

وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿٢٢٥﴾ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٢٢٦﴾

हैरान घूमते हैं? और वो केहते हैं वो बात जो वो खुद करते नहीं हैं।

مع عند المتقدمين ١٢

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ
मगर जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे और अल्लाह को बहोत ज़्यादा

كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ
याद किया और जिन्हों ने बदला लिया इस के बाद के उन पर ज़ुल्म किया गया। और अनक़रीब

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۝٢٢٧
ज़ालिम जान लेंगे के वो कैसी जगह पलट कर जाते हैं।

ع ١٥

اٰيَاتُهَا ٩٣ (٢٧) سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ (٤٨) رُكُوْعَاتُهَا ٧
उस में ९३ आयतें हैं सूरह नम्ल मक्का में नाज़िल हुई और ७ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَ كِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝١ۙ
तॉ सीन। ये क़ुरआन और साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं।

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢ۙ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
हिदायत और बशारत के तौर पर ईमान वालों के लिए। जो नमाज़ क़ाइम करते हैं

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٣
और ज़कात देते हैं और जो आख़िरत का भी यक़ीन रखते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ
यक़ीनन जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हम ने उन के सामने उन के आमाल मुज़य्यन बना दिए हैं, फिर

يَعْمَهُوْنَ ۝٤ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ
वो हैरान हैं। यही हैं जिन के लिए बदतरीन अज़ाब है और

فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝٥ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ
आख़िरत में सब से ज़्यादा ख़सारे वाले वही हैं। और यक़ीनन आप को ये क़ुरआन हिक्मत वाले,

مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۝٦ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ
जानने वाले अल्लाह की तरफ से दिया जा रहा है। जब के मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी बीवी से फ़रमाया के

الثلثة

اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ
यक़ीनन मैं ने आग देखी है। मैं अभी तुम्हारे पास आग की ख़बर या सुलगता

بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝٧ فَلَمَّا جَآءَهَا

अंगारा लाता हूँ ताके तुम तापो। फिर जब मूस (अलैहिस्सलाम) आग के पास आए

نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ

तो आवाज़ दी गई के बाबरकत है वो ज़ात जो आग में है और जो उस आग के इर्द गिर्द है।

وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨ يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ

और अल्लाह रब्बुल आलमीन पाक है। ऐ मूसा! यक़ीनन मैं ही अल्लाह हूँ,

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩ وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ

ज़बर्दस्त, हिकमत वाला। और आप अपना असा डाल दीजिए। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस को देखा के वो

كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى

हरकत कर रहा है गोया के बारीक सांप है, तो पुश्त फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा। (कहा गया) ऐ मूसा!

لَا تَخَفْ ۫ قف اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ ۝١٠

आप न डरिए। इस लिए के मेरे पास पैग़म्बर डरा नहीं करते।

اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ

मगर जो ज़्यादती कर बैठे, फिर बुराई के बदले में नेकी करे तो यक़ीनन मैं बख़्शने वाला,

رَّحِيْمٌ ۝١١ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ

निहायत रहम वाला हूँ। और अपना हाथ अपने गिरेबान में दाख़िल कीजिए, जो बग़ैर किसी बुराई के चमकता हुवा

مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ قف فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ

निकलेगा। (ये मोअजिज़े के तौर पर है) नौ मोअजिज़ात में शामिल कर के ले जाइए फ़िरऔन और उस की क़ौम की तरफ।

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝١٢ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا

इस लिए के वो नाफरमान क़ौम है। फ़िर जब उन के पास हमारे रोशन

مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٣ وَجَحَدُوْا بِهَا

मोअजिज़ात आए तो बोले के ये तो साफ़ जादू है। और उन्हों ने उन

وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ

मोअजिज़ात का इन्कार किया ज़ुल्म और तकब्बुर की बिना पर हालांके उन के दिल यक़ीन कर चुके थे। फिर आप

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝١٤ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ ع ١٤

देखिए के फ़साद फैलाने वालों का अन्जाम कैसा हुवा। यक़ीनन हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम)

وَ سُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَ قَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ فَضَّلَنَا

और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) को इल्म दिया। और उन दोनों ने कहा के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने

عَلٰی كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ

हमें अपने मोमिन बन्दों में से बहोत सों पर फ़ज़ीलत दी। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) दावूद (अलैहिस्सलाम)

دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ

के वारिस हुए और उन्हों ने कहा के ऐ इन्सानो! हमें परिन्दों की बोली का इल्म दिया गया है

وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَیْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ

और हमें हर चीज़ में से दिया गया है। यक़ीनन ये खुला फ़ज़्ल

الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ

है। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए उन के लशकर इकट्ठे किए गए जिन्नात

وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾ حَتّٰۤی اِذَاۤ اَتَوْا

और इन्सानों और परिन्दों में से, फिर उन की जमाअतें बनाई जा रही थीं। यहां तक के जब वो

عَلٰی وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا

गुज़रे च्यूंटियों के मैदान पर, तो एक च्यूंटी ने कहा ऐ च्यूंटियो! अपने घरों

مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ

में घुस जाओ, कहीं तुम्हें सुलैमान और उन के लशकर कुचल न डालें इस हाल में के उन को

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ

पता न हो। तो च्यूंटी की बात से सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने हंसते हुए तबस्सुम फरमाया और कहा के

رَبِّ اَوْزِعْنِیْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتَ

ऐ मेरे रब! तू मुझे इस की तौफ़ीक़ दे के तेरी नेअमत का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझ पर

عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ

और मेरे वालिदैन पर की है और इस की के मैं नेक अमल करूं जिसे तू पसन्द कर ले

وَاَدْخِلْنِیْ بِرَحْمَتِكَ فِیْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ

और मुझे अपनी रहमत से अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर दे। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने

الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِیَ لَاۤ اَرَی الْهُدْهُدَ ۫ اَمْ كَانَ مِنَ

परिन्दों की ख़बर ली तो फ़रमाया के क्या बात है के मैं हुदहुद को नहीं देख रहा। या वो ग़ैरहाज़िर

الْغَآئِبِيْنَ ﴿٢٠﴾ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاْذْبَحَنَّهٗٓ

है? ज़रूर मैं उसे सख़्त सज़ा दूंगा या ज़बह कर डालूंगा

اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ

या वो मेरे सामने वाज़ेह दलील पेश करे। थोड़ी ही देर बाद हुदहुद ने

فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ

कहा के मैं ने ऐसी चीज़ मालूम की है जो आप को मालूम नहीं और मैं आप के पास सबा से यक़ीनी ख़बर ले कर

يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ

आया हूँ। ये के मैं ने एक औरत को पाया है जो उन पर हुकमरान है और उसे हर

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُّهَا وَ قَوْمَهَا

चीज़ मिली है और उस के पास एक अज़ीम तख़्त है। मैं ने उसे और उस की क़ौम को पाया के

يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ

अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उन के आमाल उन्हें उम्दा

اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾

बताए हैं, और रास्ते से उन्हें रोक दिया है, इस लिए वो हिदायत पर नहीं चलते।

اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ

के सज्दा नहीं करते उस अल्लाह को जो निकालता है आसमानों और ज़मीन में छुपी हुई

وَالْاَرْضِ وَ يَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ

चीज़ और जानता है जो तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो। अल्लाह के सिवा

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ السجدة قَالَ سَنَنْظُرُ

कोई माबूद नहीं, वो अर्शे अज़ीम का रब है। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया अभी हम देखेंगे

السجدة ٨

اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ

तू सच्चा है या झूठा। मेरा ये ख़त ले कर

هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ

जा और उसे उन की तरफ डाल दे, फिर तू उन से हट कर देख

مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ

के वो क्या जवाब देते हैं? बिलक़ीस बोली के ऐ दरबारियो! यक़ीनन मेरी तरफ़ एक क़ाबिले तकरीम ख़त

كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ

डाला गया है। ये ख़त सुलैमान की तरफ़ से है और ये के अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरमान, निहायत

ع ١٧ ٢ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَتْ

रहम वाला है। ये के मुझ पर बरतरी की कोशिश न करो और मेरे पास ताबेदार बन कर आ जाओ। बिलक़ीस केहने लगी

يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً

के दरबारियो! मुझे मशवरा दो मेरे मुआमले में। मैं किसी मुआमले का क़तई फैसला नहीं

اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّ اُولُوْا

करती जब तक के तुम मौजूद न हो। उन्हों ने कहा के हम कूव्वत वाले और सख़्त

بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾

जंगजू हैं और मुआमला आप के सुपुर्द है, आप ग़ौर कीजिए जो हुक्म देना हो।

قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا

बिलक़ीस ने कहा के यक़ीनन बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे वीरान कर देते हैं

وَ جَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً ۚ وَ كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾

और उस के मुअ़ज़्ज़ज़ बाशिन्दों को ज़लील बना देते हैं। और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे।

وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ

और मैं उन की तरफ हदीया दे कर भेज रही हूँ, फिर देखती हूँ के एलची क्या जवाब ले कर

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ

आते हैं। फिर जब सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के पास क़ासिद पहोंचा, सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया क्या तुम माल से

بِمَالٍ ۫ فَمَآ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ

मेरी इमदाद करते हो? फिर अल्लाह ने जो मुझे दिया है वो बेहतर है उस से जो तुम्हें दिया है। बल्के तुम्हें

بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ

अपने हदिये पर खुशी है? (नियाज़मन्दी नहीं)। (क़ासिद!) तू उन की तरफ वापस जा, फिर हम उन के पास आएंगे

بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً

ऐसे लशकर ले कर के जिन का उन से मुक़ाबला नहीं हो सकेगा और हम उन्हें वहां से ज़लील व ख्वार

وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ

कर के निकाल देंगे। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ दरबारियो! तुम में से कौन

يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ

मेरे पास बिलक़ीस का अर्श लाता है इस से पेहले के वो मेरे पास मुसलमान हो कर आएं। जिन्नात

عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ

में से एक बड़े जिन ने कहा के मैं आप के पास उसे ले आऊँगा इस से पेहले के आप

مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾ قَالَ

अपनी जगह से उठें। और मैं यक़ीनन उस पर अमानतदार, क़ुव्वत वाला हूँ। उस ने कहा

الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ

के जिस के पास किताब का इल्म था के मैं उस अर्श को आप के पास लाता हूँ इस से पेहले के आप की

اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ

नज़र आप की तरफ वापस लौटे। फिर जब सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने अर्श अपने सामने रखा हुवा देखा

قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ

तो फ़रमाया के ये मेरे रब का फ़ज़्ल है। ताके मुझे आज़माए के क्या मैं शुक्र करता हूँ या

اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ

नाशुकरी? और जो शुक्र अदा करेगा तो सिर्फ अपनी ज़ात के फ़ाइदे के लिए करेगा। और जो नाशुकरी करेगा

فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ

तो यक़ीनन मेरा रब बेनियाज़ है, इज़्ज़त वाला है। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के तुम उस के लिए अर्श की

اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾

सूरत बदल दो, देखें उसे पता लगता है या नहीं?

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ

फिर जब बिलक़ीस आई तो कहा गया के क्या तेरा अर्श ऐसा ही है? बिलक़ीस ने कहा ये तो गोया वही है।

وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا

और हमें इस से पेहले इल्म दिया गया था और हम इस्लाम ले आए थे। और उसे रोक रखा था

مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ

उन चीज़ों ने जिन की अल्लाह के सिवा वो इबादत करती थी। यक़ीनन बिलक़ीस काफ़िर क़ौम

كٰفِرِيْنَ ﴿٤٣﴾ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ

में से थी। उस से कहा गया के तुम महल में चली जाओ। फिर जब उस ने महल देखा

حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ

तो उसे पानी से भरा हुवा पाया और अपनी पिंडलियाँ खोल दीं। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के यक़ीनन ये

صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ

ऐसा महल है जो शीशे से बनाया गया है। बिलक़ीस केहने लगी ऐ मेरे रब! यक़ीनन मैं ने अपनी जान

نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾ ع ٤

पर ज़ुल्म किया और मैं सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के साथ अल्लाह रब्बुल आलमीन पर इस्लाम ले आई।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا

यक़ीनन हम ने क़ौमे समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) को भेजा

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

के तुम अल्लाह की इबादत करो, तो अचानक वो दो जमाअतें बन गईं, आपस में झगड़ने लगीं।

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ

सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम बुराई को क्यूं जल्दी तलब कर रहे हो भलाई

الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

से पेहले? तुम अल्लाह से मग़फ़िरत क्यूं तलब नहीं करते ताके तुम पर रहम किया जाए?

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ

उन्हों ने कहा के हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को मनहूस समझते हैं। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के

عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَانَ

तुम्हारी नहूसत अल्लाह के पास है, बल्के तुम ऐसी क़ौम हो जो अज़ाब में मुबतला किए जाओगे। और

فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ

शहर में एक जमाअत के नौ आदमी थे जो उस इलाक़े में फ़साद फैलाते थे

وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ

और इस्लाह नहीं करते थे। वो बोले सब अल्लाह की क़सम खाओ के ज़रूर हम रात को सालेह (अलैहिस्सलाम)

وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ

और उन के मानने वालों पर हमला करेंगे, फिर हम उन के वारिस से केह देंगे के हम उन के घर वालों की हलाकत

اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا

के वक़्त मौजूद नहीं थे और यक़ीनन हम सच्चे हैं। और उन्हों ने एक मक्र किया और हम ने भी एक तदबीर

مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۵۰ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

की और उन्हें पता नहीं था। फिर आप देखिए के उन के मक्र का

عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝۵۱

अन्जाम क्या हुवा? ये के हम ने उन्हें भी और उन की क़ौम सब को मलयामेट कर दिया।

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

फिर ये उन के मकानात उन के ज़ुल्म की वजह से वीरान पड़े हुए हैं। यक़ीनन उस में

لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝۵۲ وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

इबरत है ऐसी क़ौम के लिए जो जानती है। और हम ने नजात दी उन लोगों को जो ईमान लाए थे

وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝۵۳ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ

और मुत्तक़ी थे। और लूत (अलैहिस्सलाम) को भेजा जब उन्हों ने अपनी क़ौम से फरमाया क्या तुम बेहयाई का इरतिक़ाब

الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝۵۴ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ

करते हो और तुम देखते भी हो? क्या शहवत के लिए तुम औरतों

شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝۵۵

को छोड़ कर के मर्दों के पास आते हो? बल्के तुम ऐसी क़ौम हो जो जहालत के काम करते हो।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْۤا اٰلَ لُوْطٍ

फिर उन की क़ौम का जवाब नहीं था मगर ये के उन्हों ने कहा के तुम आले लूत को तुम्हारी बस्ती से

مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝۵۶ فَاَنْجَيْنٰهُ

निकाल दो। इस लिए के ये ऐसे लोग हैं जो पाकबाज़ बनना चाहते हैं। फिर हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) को और

وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝۵۷

उन के मानने वालों को नजात दी मगर उन की बीवी। जिस को हम ने मुक़द्दर कर दिया था हलाक होने वालों में से।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝۵۸ ع ۴ ۱۴ ۱۹

और हम ने उन पर बारिश बरसाई। फिर उन लोगों की बारिश कितनी बुरी थी जिन्हें डराया गया था?

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ

आप फ़रमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और सलामती हो अल्लाह के उन बन्दों पर जो उस ने

اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝۵۹

मुन्तख़ब किए। क्या अल्लाह बेहतर है या वो जिन को ये लोग शरीक ठेहराते हैं?